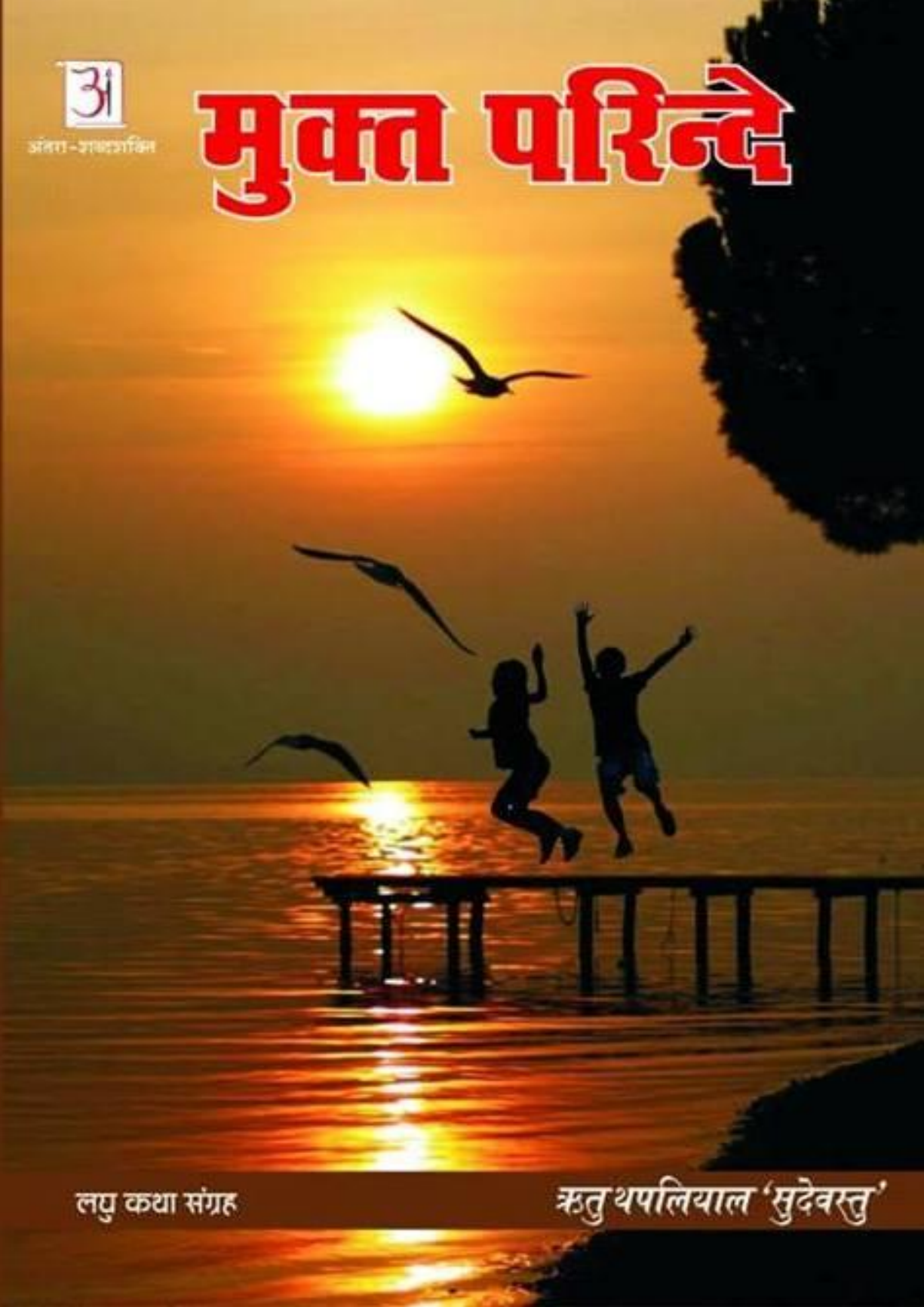

अंतरा-शब्दशक्ति

मुक्त परिन्दे

लघु कथा संग्रह

ऋतु थपलियाल 'सुदेवस्तु'

मुक्त परिंदे

(लघुकथा संग्रह)

ऋतु थपलियाल 'सुदेवस्तु'

अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन

इंदौर,मध्यप्रदेश

ISBN- 978-93-88102-04-9

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
कार्यालयनेहरु चौक वारासिवनी १५ :,जिला बालाघाट ४८१३३१ (प्र.म)
शाखा२०७-एस :, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर, इंदौर ४५२००१ (.प्र.म)
दूरभाष९४२४७६५२५९ मो २५३१५९-०७६३३ (कार्या) :
अणुडाक -antrashabshakti@gmail.com
अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण २०१८ © ऋतु थपलियाल 'सुदेवस्तु'
मूल्य ४०.०० रुपये
आवरण चित्र : संदीप सोनी, वारासिवनी
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

'Mukt parinde by Ritu Thapliyal'

वैधानिक चेतावनी : इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है | लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुरुत्पार्दित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता हैं |प्रस्तृत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई हैं | अत : प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु प्रत्येक लेखक जिम्मेदार हैं| प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र,भाषाशैली,एवं स्थान सभी लखक की कल्पना हैं | किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं हैं|

भूमिका

सर्वप्रथम **अंतराशब्दशक्ति** का धन्यवाद देना चाहूंगी ,जिन्होने महिलाओं को लेखन के क्षेत्र में प्रोत्साहित करते हुए यह सवर्णिम मंच प्रदान किया | इस सुअवसर के माध्यम से मेरे शब्द लिपि बद्ध हो सके और मेरा पहला लघु कथा संग्रह **'मुक्त परिंदे'** के रूप में आप सभी के समक्ष प्रस्तुत है | मूलतः मैं उत्तराखंड की निवासी हूँ | अपने व्यवसाय के कारण देश के कई राज्यों का भ्रमण कर चुकी हूँ | भ्रमण के दौरान मैंने इस बात का अध्ययन किया की भले ही हमारी राज्य सीमाएँ अलग हो जाए , परंतु हम एक जैसी विचारधारा को प्रवाहित करते है चाहे वो समर्थन की हो या विरोध की | मेरी इस पुस्तक में मैंने अपने आस-पास ही घटित हो रही घटनाओं को लिपिबद्ध किया है | आश्चर्य की बात यह की विभन्नाता में भी समानता की मानसिकता के दर्शन होते है |

'मुक्त परिंदे' लघु कथा संग्रह में जहां स्त्री की व्यथा (मुक्त परिंदे , आँगन की बंधुआ, मैं के आँसू , मुक्तिद्वार, निर्णय की स्वामिनी , बिखरी सलवटें) उसकी अकुलाहट , दैनिक अन्तर्मन की उथल-पुथल, अपने अस्तित्व के लिए स्वयं से युद्ध का चित्र उकेरा गया है, वही स्त्री की विचारधारा में आए बदलाव को व समाज की बेड़ियों को तोड़ते हुए उसका स्वाभिमानी रूप भी चित्रित किया गया है |

वही आज समाज को नव चेतना और विचारों की आवश्यकता है | इसी समाज की विचारधारा में हो रहे परिवर्तन और एक नवीन समाज की कल्पना का भी चित्रण (अनार के दाने, नींबू मिर्चवाला, देवी और देवता, जज़्बा, प्रायश्चित) भी लघु कथाओं में किया गया है |

दूसरी ओर मुक्त परिंदे लघु कथा संग्रह में सिक्के का दूसरा पहलू भी दिखाने का प्रयास किया गया है | जिसमे समाज में फैली विकृतमानसिकता को चित्रित किया गया है| (पंच, इंसानियत की मौत आदि)

यही नहीं **मुक्त परिंदे** में देश के वीर जवानों को श्रद्धांजलि देते हुए (जज़्बा)उनके और उनके परिवार के बलिदानो को भी नमन किया गया है | इस प्रकार **'मुक्त परिंदे'** लघु कथा में विभिन्न , परंतु मुक्त परिंदे विचरण करते हुए दिखाई देते है | लेखन में भाषा का सरल व सहज रूप प्रस्तुत प्रयास किया गया है , ताकि आम पाठक भी सहजता से शब्दों का अनुमान लगा , कथा के गूढ़ रहस्यों को समझने में समर्थ हो और स्वयं एक वैचारिक निष्कर्ष तक पहुँच सके |

आशा है मेरा प्रथम लघु कथा संग्रह **'मुक्त परिंदे'** पाठको के बीच अपनी छाप छोडने में सफल होगा | यदि कोई त्रुटि रह जाए तो मैं उसके लिए क्षमा प्रार्थी हूँ |

ऋतु थपलियाल 'सुदेवस्तु
'देहरादून , उत्तराखंड

अनुक्रमणिका

1. मुक्त परिंदे	5
2. आँगन की बंधुआ	6
3. “मैं” के आँसू	7
4. मुक्तिद्वार	8
5. निर्णय की स्वामिनी	9
6. बिखरी सलवटें	10
7. नींबू मिर्चवाला	11
8. देवी और देवता	12
9. जज़्बा	13
10.प्रायश्चित	14
11.पंच	15
12.इंसानियत की मौत	16

मुक्त परिंदे

धारा और जया दोनों कमरे की दीवार से सिमटी खड़ी थी |बैठक में बाबू जी और मास्टरनी जी की गरमा -गरम बहसा चल रही थी |ऐसा लग रहा था दो ज्वालामुखी फटकर आग और धुआँ एक दूसरे पर फेंक रहे है | बाबूजी अपने अधिकार का ब्रह्मास्त्र फेंक कर मास्टरनी जी को समझा रहे थे की एक पिता की जिम्मेदारी निभाने का समय अब आ गया है |अब लड़कियों को ब्याह के बंधन में बांधकर वो गंगा नहाना चाहते है | तो दूसरी ओर होनहार धारा और जया के भविष्य की वकालत करते हुए मास्टरनी जी उनके उज्ज्वल भविष्य के लिए जिरह कर रही थी | धारा ओर जया ने ही मास्टरनी जी को अपना वकील चुना था ताकि उन दोनों की आगे की पढ़ाई के लिए बाबूजी को मनाया जा सके |पर बाबू जी की जिरहबंदी के आगे किस की चलती | समाज, परंपराए ,संबंध सबका हवाला वो मास्टरनी जी को देकर चुप करवा चुके थे | धारा और जया की आस की डोर छूटने के कगार पर थी की तभी बाबू जी का हाथ मास्टरनी जी ने पकड़ लिया | अचानक किए गए इस हमले के लिए कोई भी तैयार न था |अब तो बाबूजी की आँखें लाल हो गई थी ,पर मास्टरनी जी को तनिक भी भय नहीं था | वो बाबू जी लगभग घसीटते हुए आँगन के उस भाग में ले आई जहाँ पिंजरे में परिंदे कैद थे |दोनों की ऊँची आवाज़ का असर यह हुआ की परिंदे भी आज बैचेन हुए जाते थे | तभी मास्टरनी जी ने परिंदो की बैचेनी को समाप्त कर दिया और पिंजरे का दरवाजा खोल दिया |बस फिर क्या था बाबूजी का मुँह और पिंजरे के दरवाजे का मुँह दोनों ही अवाक से खुले अनंत आकाश में उड़ते परिंदों को देखते रह गए | मास्टरनी जी ने आखिरी दांव खेला और कहा -"पिंजरे में कैद परिंदो की कितनी ऊँची उड़ान हैं यह तभी पता चलता है जब वो खुले आकाश में उड़ते है, वरना सारी जिंदगी वो पिंजरे में घुट कर एक दिन दम तोड़ देते है | हमारी बेटियाँ भी इन्हीं परिंदों की तरह है , जब तक इन्हें रूढ़िवादी बेड़ियों से मुक्त नहीं करेंगे ,तब तक यह जीवन की उड़ान नहीं सीख सकेंगी |" बाबूजी की आँखों में देखते हुए मास्टरनी जी ने कहा -"फैसला आपको करना है परिंदे कैद की घुटन में मर जाये या नीलांबर में उन्मुक्त हो उड़ान का आनंद ले |" मास्टरनी जी धारा और जया के उम्मीदों की डोर बाबू जी को थमाकर तेज कदमो से घर के बाहर चली गई | अगली सुबह घर में फिर से परिंदों की चहचाहट गूंजने लगी |दो मुक्त हुए परिंदे अपने आकाश में उड़ाने की तैयारी कर रहे थे |

आँगन की बंधुआ

शिवानी ने अंदर से कमरा बंध कर लिया था |सरोज को समझ नहीं आ रहा था कि वो करे तो क्या करे , दूसरी और रमेश सरोज को नाकाबिल माँ होने के ताने मार रहा था और शिवानी दरवाजा खोलने का नाम नहीं ले रही थी | आज ही शिवानी के लिए रिश्ते की बातचीत घर में हुई थी ,लेकिन शिवानी अपना करियर बनाना चाहती थी, बस इसी विरोधाभास का विस्फोट घर में हो गया था | बेचारी सरोज दो पाटो के बीच फंस गई थी | आंखो से भय के आँसू लगातार बहकर सरोज घबराहट के मुहाने तक धकेल रहे थे | तभी रमेश के चिल्लाने की आवाज़ आई | सरोज की हिम्मत अब उसका साथ नहीं दे रही थी | आखिरी बार उसने कोशिश करने की सोची और रुँधे गले से शिवानी को कहा -"बेटा बस एकबार अपनी माँ के लिए दरवाजा खोल दे |" शिवानी के ह्रदय तक शायद माँ की पीड़ा पहुँच चुकी थी ,उसने धीरे से दरवाजा खोला और वापिस कमरे में चली गई | पीछे से सरोज भी कमरे के अंदर प्रवेश कर गई , जानती थी दोनो बाप- बेटी बहुत ही जिद्दी है | दोनों में से कोई भी झुकेगा नही |सरोज ने धीरे से कहा -"शिवानी क्या है यह सब | तुम्हारे पापा ठीक ही तो कह रहे है | समय के हिसाब से बेटियों का ब्याह हो जाना चाहिए | रही बात तुम्हारे करियर की तो वो तुम शादी के बाद भी बना सकती हो ,अपने पति के साथ एक नया मुकाम पा सकती हो ,अपना मनचाहा ओहदा पा सकती हो |" शिवानी की आंखो में माँ के प्रति दया का भाव उतर आया जो छलकने लगा उसने धीरे से माँ के गले लगते हुए कहा - "सच माँ..... जैसे तुमने शादी के बाद एक मुकाम पाया है | तुम्हारा भी तो करियर था पर तुमने पापा के लिए वो छोड़ दिया क्योंकि उन्हें तुम्हारा नौकरी करना पसंद नहीं था | तुम सबकी देखभाल करती हो ,पर तुम्हें पानी का एक गिलास देने वाला कोई नहीं है | खाने की टेबल पर सब खाना खाते है पर तुम्हारे लिए वहाँ कुर्सी ही नहीं होती तुम्हारी प्लेट तक नहीं होती , पापा पूछते भी नहीं की तुम्हारे लिए खाना बचा है की नहीं | जो वो कहते है तुम उनकी खुशी के लिए करती हो, पर वो तुम्हारे लिए क्या करते है | माँ तुमने अपने पति के साथ इस घर में एक मुकाम ..... एक नया ओहदा पाया है, आँगन की बंधुआ होने का | एक ऐसी बंधुआ जो कभी मुक्त नहीं होगी | माँ मुझे यह मुकाम नहीं चाहिए |मुझे मेरा आँगन चाहिए |" इतना कहकर शिवानी ने माँ को ज़ोर से भींच लिया | सरोज के पास कोई उत्तर नहीं था | उसके शब्द नमकीन होकर बह रहे थे उसके मस्तिष्क पर बार-बार प्रहार हो रहा था, सच कहा शिवानी ने वो आँगन की बंधुआ ही तो थी | एक ऐसी बंधुआ जो कभी मुक्त नहीं होगी |

“मैं” के आँसू

“बाबूजी आपको कैंसर हो गया है |” सिद्ध ने रुँधे गले से अपने पिता को मौत का संदेश सुनाया| जय नारायण पर जैसे हज़ारों बिजलियाँ टूट पड़ी थी | वो आज अपनी कुर्सी से उठ नहीं पा रहे थे | आज उनकी गुर्राने वाली आवाज़ न जाने कहाँ छुप कर बैठ गई थी |धीरे से अपने शरीर को समेटते हुए वो कमरे से बाहर आ गए | बाहर रखी कुर्सी पर उन्होने अपने शरीर का बोझ उतार दिया , पर अपने मन के बोझ को उतारने के लिए उन्होने अपने दोनों हाथो से मुँह को ढक लिया | बंद आँखों के सामने अतीत चलचित्र बनकर घूमने लगा | सिंह के समक्ष खड़े हिरण की भांति डरी सहमी-सी ,निरीह पत्नी और चार मासूम बच्चे जो अपनी माँ के आँचल में छिपने का प्रयास कर रहे थे , जयनारायण की आँखों के पटल पर दिखाई देने लगे | बच्चो के लिए एक पिता की उपस्थिती किसी हिटलर से कम नहीं थी और बेचारी कृशकाया की स्वामिनी पत्नी | जब से शादी हुई थी तब से उसके के मुख से आवाज़ की लहरे कभी सुनाई नहीं दी | बच्चों कों भी अपने आदेश और इच्छाओ के चाबुक से चुप करवा दिया जाता था | जय नारायण ने बड़ी ही मुश्किल से अपनी आँखें खोली तो सामने वही निरीह कृशकाया की स्वामिनी पत्नी खड़ी थी, पर आज वो सहमी -सी दिखाई नहीं दे रही थी | जय नारायण जिसकी आवाज़ से ही कंपन हो जाये ,आज वह स्वयं अपनी आवाज़ को सुन नहीं पा रहा था | उसने धीरे से कहा -“सुनीला....सुनीला मैं कभी अपने परिवार के साथ नहीं रहा ..... और अब कभी रह भी नहीं पाऊँगा | क्या तुम मुझे क्षमा कर सकोगी ?”हमेशा चुप रहने वाली सुनीला ने आज अपनी चुप्पी को तोड़ दिया था | उसे आज किसी का भय नहीं था | सुनीला ने बहुत शांत भाव से जयनारायण को देखा और कहा -“अब अफ़सोस मत करिए| बीता समय वापिस नहीं आ सकता | आप हमेशा अपने “मैं “ के साथ ही रहे ,परिवार के साथ कभी रहे ही नहीं |आज उसी परिवार को छोड़ने का समय आ गया है | पर विडम्बना दिखिए न जिसके साथ आप सारी ज़िंदगी रहे वो “मैं” आज आपके साथ नहीं ...और जिस परिवार की अवहेलना आप करते रहे वो अंतिम समय में आपके साथ है |”जयनारायण की आँखों से अश्रु धारा बह निकली| सही तो कहा था सुनीला ने आज उनका “मैं” उनके साथ नहीं था |आज उनकी आँखों से ‘मैं’ की धारा बह रही थीं |

मुक्तिद्वार

अपराजिता आज बैचेन हो उठी | उसका मन मोहल्ले में गुप्ता जी के यहाँ हो रहे कीर्तन में नहीं लगा | लगता भी कैसे , गुप्ता जी का दो साल का पोता देख उसका मन भर आया | कैसी विडम्बना है, उसका पोता भी है पर वो उसको अपना आँचल भी नहीं दे सकती | रोहन और उसके पिता के बीच हुए मतभेद को लेकर जो सन्नाटा तीन साल पहले घर में पसरा था, वो आज भी बेफिक्र होकर घर की दीवारों पर रेंग रहा है | लेकिन बेचारी अपराजिता बेगुनाह होते हुये भी खामोशी और अकेलेपन की सलाखों के पीछे कैद होकर रह गई थी | लेकिन आज उसका मन उचट गया था वो अपनी मुक्ति का द्वार खोजने लगी | आँखों में उदासी का सैलाब भरकर वो घर की ओर चल पड़ी और उसके साथ उसकी वो कड़वी यादें भी चल दी | रोहन निकिता से विवाह बंधन में बंधना चाहता था|आजकल की स्वतंत्र विचारधार को देखते हुए कुछ गलत भी नहीं था | पर रोहन के पिता दिवाकर इसके सख्त खिलाफ थे ,वो चाहते थे की रोहन पहले अपने व्यवसाय में ध्यान दे फिर अपनी जात-बिरादरी में ही विवाह करे | पति और पुत्र दोनों के ही तर्क अपनी जगह सही थे | दो चक्की के पाटों में अपराजिता पीसने लगी थी | किसी एक की भी जीत उसके लिए किसी एक की हार भी थी | उसे इस समस्या से मुक्ति का द्वार दिखाई ही नहीं दे रहा था | तभी रोहन ने विद्रोह का विगुल बाजा दिया और निकिता से कोर्ट में जाकर विवाह कर लिया | घर में दिवाकर ने आसमान सिर पर उठा लिया और अपराजिता को हिदायत दे की यदि उसने फिर कभी रोहन का नाम भी लिया तो वो पत्नी के अधिकारों से वंचित हो जाएगी | बेचारी बेगुनाह औरत दो पुरुषों के अहम का शिकार हो रही थी | पर आज गुप्ता जी के पोते को देख उसके सब्र का बांध जैसे टूट ही गया | घर आते ही उसने फोन लगाया आज उसने न जाने कितने बंधनों को तोड़ दिया था और वही फोन के पास बैठ गई | तीन चार घंटे बाद ही रोहन घर के दरवाजे पर था | बेटे को देखकर दिवाकर का गुस्सा सातवे आसमान पर था | रोहन पिता की परवाह न करता हुआ माँ की ओर लपका -"माँ क्या हुआ आपको .... आपने बताया क्यों नहीं आपकी तबीयत इतनी ख़राब है |कौन से डाक्टर को दिखाया है आपने .....|" अपराजिता चुप थी | धीरे से जाकर रोहन के गले लगकर रोने लगी | पिता और पुत्र दोनों के लिए यह स्तब्ध करने वाला क्षण था |अपराजिता ने दोनों के आगे हाथ जोड़कर कहा - "मुझ बेगुनाह को तुम दोनों ने जो खालीपन की कैद दी है उसका मुक्तिद्वार यही था , नहीं तो मृत्यु ही मुझे मुक्ति दे सकती है |" अपराजिता अपने दोनों हाथों से अपने चेहरे को ढककर रोने लगी | रोहन ने दिवाकर के पैरों को तुरंत छू लिया और दिवाकर ने उसे बैठने का ईशारा किया | आज सभी के लिए मुक्ति का द्वार खुलचुका था |

निर्णय की स्वामिनी

"अगर तुम्हें मेरा रागिनी के साथ घूमना अच्छा नहीं लगा तो मुझे तलाक क्यों नहीं दे देती |" -अरविंद की चिल्लाहट घर की दीवारों के साथ- साथ मंजू के कान के पर्दे तक टकरा रही थी |यह कोई नई बात नहीं थी अरविंद उसको धोखा दे रहा है यह वह जानती थी |पर औरत ठहरी ....हर तरीके से अपने घरोंदे को बचना चाहती थी | "अरविंद तुम जानते हो तुम क्या कह रहे हो .....यह सब इतना आसान नहीं है नन्ही प्रिया को लेकर मैं कहाँ जाऊँगी | "-मंजू ने अरविंद को बेटी का हवाला देकर कहा | शायद अरविंद प्रिया को देखकर पसीज जाए | "देखो मंजू या तो तुम इस संबंध को स्वीकार कर लो या फिर अलग हो जाओ |वैसे तुम्हारी बेहतरी इसी में है की तुम चुपचाप घर के एक कोने में आराम से रहो | अकेली रहोगी तो दुनिया तुम्हें जीने नहीं देगी ,नोंच के खा जाएगी | भलाई इसी में है की तुम शांति से रहो और मुझे रागिनी के साथ रहने दो|बाहर तमाशा करने से कोई फायदा नहीं |" अरविंद ने बड़े ही निर्दयता से मंजू की कोशिशों को मसलते हुये कहा | मंजू की आंखों से वेदना का सैलाब बहने लगा | उसे लगा उसका सबकुछ बिखर जाएगा | उसे समझ नहीं आ रहा था की वो क्या करे | अरविंद उसे अपने शब्दों के जाल में बांधकर भयभीत किए जा रहा था | बार- बार तलाक की मांग कर रहा था | उसका यह मानसिक दवाब मंजू को कमजोर कर रहा था | मंजू कोई कमजोर फैसला लेती तभी मंजू के दिमाग में एक विचार आया की अरविंद सरकारी दफ़्तर में काम करते है ,तो वो दूसरी शादी तब तक नहीं कर सकते जब तक पहली वाली को तलाक न दे दे | मंजू ने अपनी शरीर की सारी ऊर्जा को समेटते हुए बुलंद आवाज में अरविंद से कहा -"अरविंद आजतक जैसा तुमने चाहा मैंने किया | यहाँ तक की अपनी नौकरी को भी दांव पर लगा दिया | तुमने मुझे अपनी दासी बनाकर रखा ,पर अब नहीं में तुम्हारे कहने पर कोई भी निर्णय नहीं लूँगी | आज से मैं अपनी जिंदगी के निर्णयों की स्वामिनी हूँ | रही बात तलाक की... तो तुम्हें कभी मुक्ति नहीं मिलेगी ,पर हाँ तुम्हें सबक जरूर मिलेगा | मैं घरेलू हिंसा व मानसिक तनाव दिये जाने के आरोप में तुम्हारी रिपोर्ट करवाने जा रही हूँ |" अरविंद को हमेशा झुकने वाली , मानमर्यादा का ध्यान रखने वाली मंजू से ऐसे उत्तर की आशा न थी | वो अवाक खड़ा देखता रहा | मंजू ने घर के दरवाजे पर पहुँचकर अरविंद को मुड़कर देखा और कहा - " तुम्हारे कारनामों की खबर मैंने तुम्हारे घरवालो को कर दी है वो आते ही होंगे |" मंजू ने प्रिया को गोद में उठाया और तेजी से घर की चौखट लाँग दी | बाहर निकलते ही उसे दासता से मुक्ति और अपने स्वामिनी होने का एहसास हुआ | तभी आत्मविश्वास से भरा हवा का झोंका उसके और प्रिया के चेहरे पर हल्की सी मुस्कान दे गया |

बिखरी सलवटें

"ओह! आज उठने में देर हो गई .... |" भाग्या ने अपने बिखरे बालो को लापरवाही से समेटते हुए कहा | वो किचन की और दौड़ पड़ी | गैस पर एक तरफ चाय का पानी रख ,दूसरी ओर वो बच्चों के लिए नाश्ते बनाने का सामान फ्रिज से निकालने लगी | उसका शरीर किसी मशीन की भांति काम कर रहा था | सारी तैयारी कर उसने डाइनिंग टेबल को सुबह की दिनचर्या के सामान से सजा डाला था |

चाय का कप हाथ में लिए यश के बिस्तर के पास पहुँच गई | यश को चाय देकर बच्चों को तैयार करवाने लगी | यश अलसाई आँखों से सब देख रहा था और अपनी अदरक और काली मिर्च की चाय का आनंद ले रहा था | भाग्या को आज पाँच मिनट की देरी का एहसास हो गया था | उसने यश को कहा - "यश प्लीज आज तुम बच्चों को बस तक छोड़ दो | मुझे अभी हम दोनों के दफ्तर जाने की भी तैयारी करनी है |" यश ने चाय की चुस्की लेते हुए कहा -"क्या तुम भी .... समय से नहीं उठ सकती हो | तुम ही जाओ छोड़ने |"

भाग्या के पास मनुहार करने का भी समय नहीं था | वह अलमारी में अपना कुर्ता ढूँढने लगी | "क्या ढूंढ रही हो | बच्चों को देर हो जाएगी |" -यश ने थोड़ा ज़ोर से कहा | "अपना कुर्ता ढूंढ रही हूँ | नाइटी में सलवेटे पड़ी हुई है | ऐसे जाऊंगी तो अच्छा नहीं लगेगा , आज वैसे ही देर हो गई है |" "ओहो ....अब कौन है तुम्हें देखने वाला . ....वैसे भी सक्कू बाई की तरह ही दिखती हो | किसी को तुम्हारी सलवटों का बुरा नहीं लगेगा |" यश ने लापरवाही से व्यंग बाण भाग्य की ओर चला दिया और खुद बाथरूम में चला गया |

अंदर तक घायल हुई भाग्य के पास रिस रहे घाव को देखने का भी समय नहीं था | उसने जल्दी से कुर्ता पहना और बच्चों को बस तक छोड़ आई | यश जब तक बाथरूम से बाहर आए तबतक यश के प्रेस किए हुए कपड़े ,नाश्ता सबकुछ तैयार हो चुका था | भाग्य जल्दी -जल्दी बिस्तर समेटने लगी तभी उसकी नजर बिस्तर की बिखरी सलवटों पर रूक गई | उसकी आँखों में गीलापन आ गया | सच ही तो है जो रातभर सलवटों का स्वामी बना रहा , सुबह होते ही उसे बिखरी सलवटों के साथ छोड़ गया | औरत की जिंदगी सलवटों की तरह ही होती है ,जिसे वो कभी सँवार नहीं पाती |

नींबू मिर्चवाला

अक्कू बाजार में एक दुकान के बाहर खड़ी बाकी दुकानों का जायजा ले रही थी की किस दुकानपर जाया जाए जहां उस जैसी मध्यम वर्गीय लोगो की मनपसंद और जरूरत की ख़रीदारी हो सके | सत्य भी है मध्यम वर्ग के लोग घर से ही ख़रीदने वाले समान की सूची बना कर चलते है | हैसियत से ज्यादा लेना उनके लिए महीनेभर की कटौती का सौदा हो जाता है | तभी दुकान से एक लड़का बाहर आया जिसके हाथ में नींबू मिर्च का एक गुच्छा था | अक्कू को देखते ही बोला -"मैडम लेंगी क्या ?आखिरी बचा हुआ है अपने घर पर लगा लीजिएगा

आज शनिवार है , आप के घर की सारी बुरी बलाए और बुरी नज़र दूर हो जाएगी |" अचानक से हुए इस हमले से अक्कू को समझने में थोड़ा समय लगा , तभी उसने थोड़ा तीखी आवाज में मना करते हुए आगे जाने में ही भलाई समझी | बाज़ार में घूमते हुए अभी अक्कू कुछ दूरी पर ही गई थी की उसका पैर सड़क पर फेंके गए पुराने हो चुके नींबू मिर्च के गुच्छे पर पड़ते-पड़ते बचा | अचानक से बिजली की कौंध की तरह उसके दिमाग में उसी लड़के के शब्द कडक उठे 'बुरी बला दूर हो जाएगी '| अक्कू ने भगवान को धन्यवाद दिया की इस तंत्र पर उसका पैर नहीं पड़ा | तभी वही लड़का उसे फिर से मिल गाया | अक्कू को देखते ही फिर उससे नींबू मिर्च खरीदने की जिद्द करने लगा | अक्कू को जाने क्या सूझी उसने थोड़ा व्यंग्यात्मक लहजे में कहा -"तू ही क्यो नहीं टांग लेता अपने घर में तेरी भी बुरी बलाए ऊतर जाएगी | फिर तुझे नींबू मिर्च नहीं बेचना पड़ेगा |"

लड़का ज़ोर से हँसने लगा और बोला -"मैडम मेरे घर का एक कमरा इन्हीं नींबू मिर्च के गुच्छों से भरा पड़ा है | कभी -कभी तो अम्मा मिर्च और नमक पीस कर नींबू के साथ रोटी खाने को देती है | अपने-अपने विश्वास की बात है | लोग डर के कारण इन्हें लगाते है और मैं अपने रोजगार के कारण | मुझपर तो बहुत कृपा है इन नींबू मिर्च की |" तभी एक दुकानदार ने लड़के को नींबू मिर्च का गुच्छा खरीदने के लिए बुला लिया | अक्कू दूर जाते लड़के को देखती रही कितनी सहजता से सच कह गया था | हमारा अंधविश्वास किसी के रोजगार का साधन भी हो सकता है | एक नींबू और चार मिर्च से बना गुच्छा जहाँ नजर उतारने का तंत्र बन गया और हम उससे डरकर चल रहे है ,वही कोई इस तंत्र को आराम से अपने घर में संरक्षण दिए हुए है | अक्कू एक सामूहिक समझ पर मुसकुराती हुई आगे बढ़ गई |

देवी और देवता

"देखो बेटा मुन्नी अभी बहुत छोटी है और तुम्हारी बहन भी तो है न | बहनों को मारा नहीं करते , पाप लगता है | भगवान जी नाराज हो जाते हैं |"-नंदनी अपने आठ साल के बेटे देबू को समझा रही थी |

देबू ने आज अपनी छोटी बहन को बहुत सताया था |देबू अपनी गोल- गोल आंखो से अपनी माँ को देख रहा था | फिर अपनी छोटी -छोटी बाहें माँ के गले में डालकर बोला -"माँ भगवान जी क्यों नाराज़ हो जाएँगे |" नंदनी ने लंबी सांस भरकर कहा - "क्योंकि मुन्नी लड़की है और लड़कियाँ देवी का रूप होती है |"

देबू ने झट से माँ का मुँह हाथों में लेकर कहा -"और मैं.... माँ मैं क्या हूँ | " नंदनी के चेहरे पर हँसी आ गई |देबू के भोलेपन ने माँ का दिल जो जीत लिया था | नंदनी ने हँसते हुये कहा -"केवल लड़कियाँ ही देवी का रूप होती हैं लड़के नहीं |"

देबू ने अपने दिमाग पर कुछ ज़ोर दिया फिर माँ की आंखो में देखकर कहा -" माँ तुम रोज किसकी पूजा करती हो |"

"हनुमान जी की, क्यों ऐसा क्यों पूछ रहे हो |" -नंदनी ने देबू को गोद में भरते हुए कहा| "माँ हनुमान जी भी मेरी तरह लड़के हुए न और तुम रोज उनकी पूजा करती हो,तो जब वो लड़के होकर देवता है तो फिर मैं क्यों देवता नहीं बन सकता, केवल मुन्नी ही क्यों देवी होगी |" देबू ने मासूमियत के साथ नंदनी के सामने अपनी बात और जिज्ञासा रख दी और रख दिया एक प्रश्न भी जो कुछ सोचने पर मजबूर कर दे |

नंदनी के पास अब कहने को कुछ नहीं था बस अब वो सोच रही थी , देबू ने सच ही कहा था | ईश्वर ने तो अद्भुत सृजन किया था ,परंतु मानव ही दानव बन गया| हमने अपने बेटों को यह शिक्षा तो दी की लड़कियाँ देवी है , पर उनको उनके असली मकसद से अवगत नहीं कराया, कि वो भी देव रूप है और उनका काम रक्षा करना है न कि संहार | सच हमने स्त्री और पुरुष में अंतर कर दिया, परंतु उनके मुख्य उद्देश्य के बारे में जानना नहीं चाहा और न ही अपनी युवा पीढ़ी को बताना चाहा |नंदनी ने अपने ह्रदय के टुकड़े को अपने सीने से चिपका लिया और कहा - "हाँ ! देबू तुम भी देवता हो और तुम्हारा काम रक्षा करना है | तो आज से तुम मुन्नी की रक्षा करना |"

नन्हा देबू खुशी से झूम उठा और दौड़ पड़ा अपनी मुन्नी से माफ़ी माँगने| नंदनी सोचने लगी की आज उसने एक तरफा शिक्षा नहीं दी बल्कि अपनी पीढ़ी को उसके अस्तित्व से परिचित करवा दिया |

जज़्बा

रोहिणी अपने दफ़्तर में बैठकर विध्यालय में हुई प्रवेश परीक्षा के परिणाम देख रही थी| थोड़ी देर बाद ही उतीर्ण हुए विध्यार्थियों और उनके माता- पिता को साक्षात्कार के लिए बुलाया गया | तभी बूढ़े दंपत्ति के साथ एक नन्हा बालक दफ़्तर में आया | बुजुर्ग दंपत्ति की हालत देखकर उनकी आर्थिक स्थिति का अंदाजा लगाया जा सकता था | रोहिणी ने उन्हे बैठने को कहा और बच्चे के परिणाम की फाइल हाथ में ले ली | फाइल के पन्ने पलटते हुए उसके चेहरे पर मुस्कान की लहर दौड़ गई | बच्चा सभी विषयों में अव्वल अंक लाया था, पर रोहिणी के मन में कुछ शंका होने लगी | वो किसी के ह्रदय को ठेस नहीं पहुंचाना चाहती थी |

बुजुर्ग दंपत्ति की फटी धोती , चेहरे पर उभरी अनगिनत झुर्रियों और उनके रूखे हाथों को देखकर उसे उनसे कुछ भी पूछने में हिचकिचाहट हो रही थी | तभी उसने साहस करके पूछ ही लिया -"आपके बच्चे ने तो कमाल ही कर दिया | विध्यालय को ऐसे होनहारों की आवशयकता हैं , पर जैसा की आप जानते ही है हमारे विध्यालय की फीस बहुत ज्यादा है | क्या आप (रोहिणी ने थोड़ा सकुचाते हुये पूछा) विद्यालय की फीस दे पायेंगे |" बुजुर्ग दंपति के चेहरे पर गर्व का भाव उत्पन्न हो गया उनकी आँखें सजल हो उठी | आँखों को पोछते हुए बूढ़े व्यक्ति ने हाथ जोड़कर कहा- "क्यों नहीं, अगर देश को हम अपना बेटा दे सकते हैं , तो पोते की इच्छा के लिए सबकुछ कर सकते है |"

बूढ़ी महिला ने धीरे से काँपते शब्दों का सहारा लेकर कहा -" इस देश को अभी एक और सैनिक की आवशयकता है , पर उससे पहले एक पढे लिखे नागरिक की भी आवशयकता है|" रोहिणी उनका उत्तर सुनकर कुछ हैरान-सी हो गई उसने तुरंत बच्चे की फाइल में रखा फार्म देखा | बच्चे के पिता के नाम के स्थान पर शहीद हवलदार सुखराम लिखा था | रोहिणी बुजुर्ग दंपत्ति के जज़्बे को देखकर गर्व से भर गई | उसने तुरंत एक महत्वपूर्ण निर्णय लिया | वो अपनी कुर्सी से खड़ी हो गई और उनके आगे हाथ जोड़कर बोली -"क्या आप देश सेवा करने का मौका मुझे भी देंगे | आपके पोते को हमारे विध्यालय में मुफ्त शिक्षा दी जाएगी | यही हमारी ओर से वीर जांबाजों को श्रद्धांजलि होगी |"

बूढ़े दंपति की आँखें नम हो गई और नन्हें सैनिक की आंखो में खुशी की चमक आ गई | रोहिणी ने एकबार फिर दोनों के जज़्बे को प्रणाम किया | सच आज देश को ऐसे ही जज़्बे रखने वालो की आवशयकता है , जो देश के लिए कुर्बानी दे सके और जो उस कुर्बानी का महत्व समझ सके |

प्रायश्चित

आराधना के यहाँ नवरात्री के व्रत चल रहे थे , तो लाजमी था घर में पूजा का माहोल बना हुआ था और सभी का व्रत होने के कारण घर में खाना नहीं बन रहा था | लक्ष्मी रोज की तरह घर का काम कर रही थी | झाड़ू, बर्तन ,कपडे सभी की जिम्मेदारी उसी की थी, पर जब से व्रत प्रारंभ हुए थे वो कुछ गुमसुम-सी थी| चुपचाप अपना काम करती |आराधना के कुछ पूछने पर ही जवाब हाँ या ना में देती | आराधना पूजा पाठ में इतनी व्यस्त हो गई की लक्ष्मी में आए बदलाव को वो देख न सकी | आज व्रत का चौथा दिन था| लक्ष्मी सफाई के लिए देर से आई , तब आराधना अपनी पूजा की तैयारी कर रही थी| लक्ष्मी को देखकर आराधना जैसे ही देरी की वजह पूछने को हुई तो उसकी निगाह लक्ष्मी की सूजी आँख की ओर चली गई "अरे लक्ष्मी, क्या रात भर सोई नहीं तू, तेरी आँखे क्यों सूजी हुई है?"

लक्ष्मी फूट-फूटकर रोने लगी और आराधना के सामने बैठ गई| रोते हुए बोली - "बीबी जी तीन दिन से खाना नहीं खाया हैं | आप जो बचा- कुचा देती थी ,वो मेरे बच्चे शौक से खाते थे | आपके व्रत हैं न , पर मेरे यहाँ बच्चे भूख से रो रहे है | महीने का आखिरी चल रहा है, ज्यादा पैसे नहीं है मेरे पास की दुकान से कुछ लेकर आ जाऊं और राशनवाला भी उधार नहीं देना छटा है "

यह सुनकर आराधना को जोर का धक्का लगा | उसे ऐसा लगा जैसे उसके व्रतों का कोई मोल नहीं रह गया है | उसके घर के बचे खाने से किसी परिवार की भूख मिटती है| उसने यह कैसा पाप कर डाला| लक्ष्मी को आँगन में बैठा अपने प्रायश्चित के लिए वो किचन की ओर दौड़ पड़ी |

पंच

आज गाँव में पंचायत बुलाई गई थी | पूरा गाँव पंचायत में उमड़ पड़ा था| होता भी क्यो न बधिया की छोरी ने काम ही ऐसा किया था | बेचारा बधिया हाथ जोड़कर अपनी सजा भुगतने के लिए पंचायत के सामने खड़ा था | गरीब जानता था की न्याय कभी नहीं मिलेगा क्योंकि अमीरों के समाज में गरीबों को अधिकार प्राप्ति नहीं होती और यहाँ तो उसकी छोरी की पढ़ने की बात थी, वो भी दूसरे गाँव जाकर पढ़ने की ,फिर कैसे गाँव के रसूकदारों को यह बात हजम हो जाती | इसलिए गाँव के बड़े जमींदार ने आपत्ति जताई और इसे बधिया का दोष मानकर पंचायत बुलाने का फैसला किया |

“हमारे गाँव की छोरी बाहर स्कूल पढ़ने जावेगी ,तो हमारी नाक कट जावेगी | फिर इन छोरियों को बिगड़ने से कोई न रोक सके है और हम अपने गाँव का माहोल खराब न होने देंगे क्योंकि हम अपनी इज्जत दांव पर न लगा सकते |”-बड़े जमींदार ने ऊँची आवाज में अपनी मूछो पर ताव देते हुए कहा | पंचो की ओर मुँह करके उसने पंचों से पूछा -“क्यो पंचों क्या कहना है तुम्हारा |” बधिया फैसला दिये जाने से पहले ही फफक कर रो दिया और उसका परिवार हाथ जोड़ कर दया की भीख मांगने लगा | बेचारा गरीब जन्म तो ले सकता है पर कोई अधिकार नहीं ले सकता हैं | उसकी पत्नी भय की चादर ओड़ कर अपने बेगुनाह पति के लिए रहम की भीख मांगने लगी |छोटी सी बच्ची ने अपने बापके लिए अपनी इच्छाओं का गला घोंट दिया था | वो भी डर के मारे रो रही थी |

तभी पंच आपस में विचार विमर्श करने लगे |उनमे से एक बूढ़ा पंच खड़ा हो गया | उसने पहले बड़े जमींदार की ओर देखा जो अपनी जीत का जश्न पहले ही मना रहा था, फिर वो गाँव के लोगों की ओर देखकर बोला - “बड़े जमींदार की बात बिलकुल सही है अगर हमारी छोरियाँ बाहर स्कूल जावेगी तो जरूर बिगड़ जावेगी..... ”(अब सब समझ गए की फैसला रसूकदारों के हक में होने वाला है) बूढ़े पंच ने थोड़ा रुककर कहा -“तो हम पंचो ने सोचा है कि क्यों न हम एक काम करे , स्कूल को ही अपने गाँव ले आवे इससे गाँव का महोल भी खराब न होगा और इज्जत भी बच जावेगी | भई “बेटी पढ़ाओ और बेटी बचाओ”| सब तरफ सन्नाटा था | बड़े जमींदार का मुँह देखने लायक था | पराजित सा वह मैदान छोडकर भाग गया | गाँव के लोगों में खुशी कि लहर दौड़ गई | बधिया के आँसू बदल गए थे अब वो खुशी के आँसू थे | उसने ज़ोर से कहा - “पंचों कि जय” | सच में आज पंचो में परमेशवर विराजित थे |

इंसानियत की मौत

सड़क पर एक जोरदार धमाका हुआ और आकाश में काले गुबार और आग की लपटे फैल गई | चारों तरफ अफरा-तफरी मच गई | राजन ने देखा की मौत उससे कुछ ही दूरी पर अपना खेल , खेल गई थी | उसके दिमाग की नसे सुन्न होने लगी | लोगों को भागते देख वो भी वहाँ ठहरने की हिम्मत नहीं कर सका | लोगो के शोर से उसे पता चला की बस में बम धमाका हुआ है | तभी राजन के कदम कुछ ठहर से गए उसके कानों में कुछ चीखें गूंजने लगी ,जो अपने को बचाने के लिए आवाज़ दे रही थी |

राजन ने देखा कुछ लोग विपरीत दिशा में भी दौड़ रहे है | राजन के पैरों की गति कुछ धीमी हो गई | उसने भी अपना रुख उसी ओर कर लिया | आखिर इंसान होने का मतलब क्या , अगर इंसान अपनी इंसानियत ही भूल जाए | राजन के अंदर बैठी इंसानियत ने उसे झँझोड़ दिया और उसे घायल लोगो की मदद करने के लिए प्रेरित करने लगी| तभी राजन को ख्याल आया की जिम्मेदार नागरिक होने के नाते उसे घटना की सूचना पुलिस को दे देनी चाहिए | ताकि मदद जल्दी से पहुँच सके | राजन ने फुर्ती के साथ पुलिस स्टेशन फोन किया - “साहब जल्दी किशन पुरा बस अड्डे पहुँच जाइए | बम धमाका हुआ है |” “तुम कौन बोल रहे हो ? ...अपना नाम बताओ |” उधर से एक कडक व रूखी आवाज़ राजन को सुनने को मिली |

राजन ने बिना देरी किए अपना नाम बता दिया | लेकिन पूछताछ का सिलसिला लंबा होने लगा | राजन को अजीब-सी खीज और बैचनी महसूस होने लगी | उसने फोन को बंद करने में ही भलाई समझी | जो लोग उस घटना स्थल की ओर दौड़ रहे थे उनके हाथों में मोबाइल थे | राजन को लगा , वो ही अकेला नहीं जो जिम्मेदार हो और भी है जो अपना कर्तव्य निभा रहे है | तभी इंसानियत की आवाज़ उसे सुनाई दी और वो दौड़ पड़ा ... ,.पर यह क्या देखता है वो इन्सानों की लाशों के ढेर पर इंसानियत भी मरी पड़ी है | कुछ थे जो इंसान और इंसानियत को बचाने की कोशिश कर रहे थे | पर कुछ जो लोग मोबाइल लेकर दौड़ रहे थे ,वो घटना स्थल का वीडियो बना रहे थे | उनमें से कई सेल्फ़ी ले रहे थे | राजन को लगा आज इंसान ही नहीं इंसानियत की भी मौत हो गई है और उसे दोनों को ही बचाना होगा |

व्यक्तित्व दर्पण

नाम	- ऋतु थपलियाल 'सुदेवस्तु'
जन्मतिथि	- 22 जनवरी 1975, दिल्ली
माता-पिता	- श्रीमती सरोज जखमोला -श्री विध्या दत्त जखमोला
पति	- श्री सुबोध थपलियाल
मूल निवासी	- देहरादून, उत्तराखंड
वर्तमान पता	- दिल्ली पब्लिक स्कूल, गांधीधाम, गुजरात/देहरादून, उत्तराखण्ड
शिक्षा	- एम.ए., बी.एड.,प्राणिक हीलर
पद	- हिन्दी शिक्षिका (विभागाध्यक्ष) व लेखिका
मो.नं.	- 8142123421, 9581116688
ई मेल	- rituth@gmail.com - http://sudevastu.blogspot.in
प्रकाशन	- कविता संग्रह (दो वर्षों से समाचार पत्र स्वतंत्र वार्ता में प्रकाशित), अलकनंदा पत्रिका में आलेख, कविताएं प्रकाशित, अंतराष्ट्रीय पत्रिका प्रयास से लेख व कवितायें, काव्य स्पंदन से प्रकाशित कविताएं, काव्य अमर उजाला से कविताएं प्रकाशित, वेब पत्रिकाओं से कविताएं प्रकाशित, प्रतिलिपि से छः कहानियाँ और एक लेख प्रकाशित रिश्तों के अंकुर साझा संकलन से कहानियाँ प्रकाशित।
सम्मान	1. डेली मिलाप समाचार पत्र हैदराबाद द्वारा सर्वश्रेष्ठ कविता का सम्मान 2017। 2. सर्वश्रेष्ठ कहानीकार सम्मान 2018। 3. हिंदी सागर द्वारा काव्य श्री सम्मान और शब्द शिल्पी सम्मान। 4. साहित्य संगम द्वारा दो बार श्रेष्ठ रचनाकार और श्रेष्ठ टिप्पणी कार सम्मान। 5. नारी संगम सुवास द्वारा श्रेष्ठ रचनाकार सम्मान। 6. शीर्षक साहित्य परिषद द्वारा दैनिक श्रेष्ठ रचनाकार सम्मान (तीन बार)। 7. वर्तमान अंकुर द्वारा कथा गौरव सम्मान। 8. आगाज समूह द्वारा दैनिक श्रेष्ठ रचनाकार सम्मान।
संबद्धता	- रामी समाज सेवी संस्था की सदस्या (दिल्ली)

Women आवाज़
www.WomenAawaz.com

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

मूल्य 40/-

१५, नेहरू चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१, सम्पर्क- ९४२४७६५२५९, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com